डॉ. शशि भूषण
अतिथि सहायक प्राध्यापक
हिन्दी विभाग
एस. आर. ए. पी. कॉलेज,
बारा चकिया

B.A. Part – I
हिन्दी प्रतिष्ठा
Paper – I

Date :- 09-02-2022

Ajanta
Page No.
Date

कबीरदास के पद की व्याख्या (भाग-4)

तूँ तूँ करता तूँ भया,
तुझ में रहा समाय।
तुझ माहीं मन मिलि रहा,
अब कहुँ अनत न जाय॥

व्याख्या :-

सतगुरु का स्मरण करते-करते मनुष्य (व्यक्ति) का उनसे एकाकार हो जाता है। इसलिए सतगुरु की महिमा अपार है जिसकी कृपा से अपार ब्रह्म के दर्शन करने की दृष्टि उसे प्राप्त हुई है। इस प्रकार के साधक का मन पूर्ण आश्वस्त हो जाता है और वह कभी भी विचलित नहीं हो पाता।

अर्व खर्व लौं दर्ब है,
उदय अस्त लौं राज।
भक्ति महातम ना तुलै,
ये सब कौने काज॥

व्याख्या :-

अरब - खरब तक भी यदि द्रव्य प्राप्त हो जाय अथवा उदयाचल से अस्ताचल

Scanned by CamScanner

तक का राज्य प्राप्त हो जाय तो वे सभी द्रव्य और राज्य सद्गुरू की भक्ति की विशेषता की बराबरी नहीं कर सकते। अंत समय में जीव इस सबों को यहीं छोड़ कर चला जाता है किन्तु सद्गुरू की भक्ति परम-धाम तक पहुँचा देती है अर्थात् उसके साथ ही रहती है।

Scanned by CamScanner